E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

मृच्छकटिक

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

संस्कृत नाट्यसाहित्य का प्रगल्भ प्रकरण 'मृच्छकटिक' राजा शूद्रक की कृति के रूप में विख्यात है। यह अपने ढंग का अकेला नाटक है। इसमें एक साथ प्रणय कथात्मक प्रकरण, धूर्त्तसंकुल भाण तथा राजनीतिक नाटक का वातावरण दूध-पानी की तरह घुला-मिला प्रतीत होता है। संस्कृतसाहित्य में यह अकेला नाटककार है, जिसने अपने युग की सामाजिक समस्याओं को अपने नाटक का विषय बनाया है।

भासकृत चार अंकों के नाटक 'चारुदत्त' को परिबृंहित करके उज्जयिनी की गणिका वसन्तसेना और वाणिज्यजीवी ब्राह्मण चारुदत्त की प्रचलित प्रीतिकथा को परिणति तक पहुँचाने वाले मृच्छकटिक में राजविप्लव का कथानक जोड़कर इसे दस अंकों का बनाया गया है। इसका लेखक अवश्य ही यथार्थ के कठोर धरातलल की प्रस्तुति के संकोच के आवरण से दूर था।

मृच्छकटिक के रचनाकार की कल्पना और अभिव्यञ्जना अपनी समग्रता में अपने युगीन जीवन के विस्तृत परिवेश और आवेष्टन से हमें परिचित कराती है और उसकी गूढ, धूमिल और अदृश्य अर्थभरी छवियों से हमारा गम्भीर एवं सूक्ष्म सम्बन्ध स्थापित कराती है। कवि के नाटक की भाषा और उसकी गम्भीर अनुभूति बाहर से जितनी स्पष्ट लगती है, आन्तरिक रूप में वह जीवन के गतिशील जल की सूक्ष्म, सूक्ष्मतर गहराइयों और अर्थच्छवियों के मर्म का स्पर्श कराने वाली है।

मृच्छकटिक की संक्षिप्त कथा- इस नाटक में 10 अंक हैं। यह रूपक का एक भेद 'प्रकरण' है । इसमें एक निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त का वसन्तसेना नामक गणिका (वेश्या) से प्रेम-वर्णन है। अन्त में दोनों का प्रेम सफल होता है और वसन्तसेना का चारुदत्त से विवाह होता है। साथ ही 'पालक' नामक राजा को मार कर आर्यक के राजा होने का वर्णन है। अंकों के अनुसार संक्षिप्त कथा इस प्रकार है-(अंक १) इस

अंक का नाम 'अलंकार-न्यास' है। राजा का साला वसन्त सेना पर अनुरक्त है और उसे पकड़ने के लिए उसका अँधेरी रात में पीछा करता है। वह चारुदत्त के घर में घुस जाती है और अपने प्रेमी निर्धन चारुदत्त से वार्तालाप करती है तथा धूर्तों से बचने के लिए अपने गहने उतार कर उसके पास छोड़ देती है। (अंक २) इस अंक का नाम 'द्यूतकर-संवाहक' है। चारुदत्त का एक पुराना नौकर संवाहक जुए में ऋणी होकर वसन्तसेना के पास आता है। वह उसे धन देकर ऋण मुक्त करती है। वह संवाहक बौद्ध भिक्षुक बन जाता है। थोड़ी देर बाद वसन्तसेना का मत्त हाथी उस पर आक्रमण करता है और वसन्तसेना का नौकर उस नए भिक्षुक को बचाता है। चारुदत्त पुरस्कार रूप में उसे अपना उत्तरीय (रेशमी चादर) देता है। (अंक ३) इस अंक का नाम 'सन्धिच्छेद' (सेंध लगाना) है। वसन्तसेना की दासी मदनिका को मुक्त कराने के लिए शर्विलक चारुदत्त के मकान में सेंध लगाता है और वसन्तसेना के आभूषण चारुदत्त के घर से चुरा ले जाता है। चारुदत्त की पत्नी धूता उन आभूषणों के बदले में अपनी रत्नमाला देती है। विदूषक उसे वसन्तसेना के पास ले जाता है। (अंक ४) इस अंक का नाम 'मदनिका-शर्विलक' है। शर्विलक वसन्तसेना के चुराए आभूषण वसन्तसेना को देकर अपनी प्रेयसी मदनिका को मुक्त कराता है और उसे वधू बनाता है। शर्विलक को अपने मित्र आर्यक के बन्दी होने की सूचना मिलती है। वह मदनिका को छोड़कर आर्यक, जो राजा होने वाला है, को बचाने के लिए चल पड़ता है। विदूषक धूता की रत्नमाला वसन्तसेना के पास पहुँचाता है। वसन्तसेना रात्रि में चारुदत्त से मिलने आने का सन्देश भेजती है। (अंक ५) इस अंक का नाम 'दुर्दिन' है। इसमें वर्षा का सुन्दर प्राकृतिक वर्णन है। वसन्त सेना चारुदत्त के घर ही वह रात्रि बिताती है। (अंक ६) इस अंक का नाम 'प्रवहण-विपर्यय' (गाड़ी बदलना) है। अगले दिन प्रातः वसन्तसेना चारुदत्त की पत्नी को उसकी रत्नमाला लौटाना चाहती है, परन्तु वह उसे स्वीकार नहीं करती। चारुदत्त का पुत्र रोहसेन मिट्टी की गाड़ी (मृत्-मिट्टी, शकटिका-गाड़ी, मृच्छकटिक) लिए हुए आता है और शिकायत करता है कि उसे सोने की गाड़ी चाहिए। वसन्तसेना उसकी गाड़ी पर अपने आभूषण रख देती है, जिससे वह सोने की गाड़ी खरीद सके। वसन्तसेना को अपने प्रेमी चारुदत्त से मिलने उद्यान में जाना है। वह भूल से वहीं खड़ी शकार की गाड़ी पर सवार हो जाती है। आर्यक जेल से भागा हुआ है और शरण चाहता है। वह

वसन्तसेना के लिए खड़ी चारुदत्त की गाड़ी पर बैठ जाता है। मार्ग में चन्दनक नामक एक सिपाही आर्यक को अभयदान देकर उसकी गाड़ी आगे जाने देता है। (अंक ७) इस अंक का नाम 'आर्यकापहरण' (आर्यक का भागना) है। आर्यक उद्यान में चारुदत्त से मिलता है। चारुदत्त उसे अभयदान देता है और उसके बन्धन कटवाकर उसी गाड़ी में उसे विदा करता है। (अंक ८) इस अंक का नाम 'वसन्तसेना-मोटन' (वसन्तसेना का गला घोंटना) है। वसन्तसेना उद्यान में पहुँचती है। शकार उससे प्रणय-निवेदन करता है। प्रणय अस्वीकार करने पर वह वसन्तसेना का गला घोंटता है। उसे मरा समझ कर पत्तों से ढँक देता है और चारुदत्त पर वसन्तसेना की हत्या का मुकदमा चलाने के लिए न्यायालय जाता है। बौद्ध भिक्षुक संवाहक वहाँ आता है और वसन्तसेना को मृतप्राय देखकर उसकी सेवा करके उसे पुनरुज्जीवित करता है। (अंक ९) इस अंक का नाम 'व्यवहार' (न्यायालय) है। शकार चारुदत्त के विरुद्ध अभियोग चलाता है। चारुदत्त बुलाया जाता है। बालक रोहसेन को दिए आभूषण लौटाने के लिए विदूषक वसन्तसेना के पास जा रहा है। उसके पास से आभूषण निकलने से सिद्ध हो जाता है कि आभूषणों के लिए चारुदत्त ने वसन्तसेना की हत्या की है। चारुदत्त को मृत्युदण्ड दिया जाता है। (अंक १०) इस अंक का नाम 'संहार' (उपसंहार) है। राजा पालक को मारकर आर्यक राजा हो जाता है। वह वध के लिए प्रस्तुत चारुदत्त को तुरन्त छुड़वाता है। चारुदत्त का वसन्तसेना से पुनर्मिलन होता है। वसन्तसेना चारुदत्त की वधू बनती है। चारुदत्त शकार को क्षमा कर देता है। इस प्रकार चारुदत्त- वसन्तसेना के विवाह के साथ कथा समाप्त होती है।

शूद्रक की नाट्यकला सम्बन्धी विशेषताएँ- शूद्रक का मृच्छकटिक संस्कृत नाटकसाहित्य में एक अद्भुत रचना है। इसमें जन-जीवन का वास्तविक चित्रण मिलता है। यह वस्तुतः जनता का जनता के लिए और जनता के द्वारा विरचित है। जन-जीवन का जितना विस्तृत, वास्तविक और व्यापक चित्रण मृच्छकटिक में मिलता है, उतना अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। इसकी प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप में विवरण नीचे दिया जा रहा है-

कथा-वस्तु या कथानक-१. यह रूपक के १० भेदों में से 'प्रकरण' रूपक है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में प्रकरण के लिए जो आवश्यक निर्देश दिए हैं, उनका इसमें पालन किया गया है। (२) नाटक की

कथा-वस्तु कल्पित है। (३) इसका नायक राजा आदि न होकर एक निर्धन ब्राह्मण है तथा नायिका रानी आदि न होकर एक विदुषी गणिका है। (४) इसमें मध्यमवर्गीय पात्रों की सामाजिक स्थिति का वास्तविक चित्रण है। इसमें विट, शकार, वेश्या, सार्थवाह, द्यूतकार आदि के दैनिक कार्यों का उल्लेख है। (५) इसमें नाटकीयता के साथ काव्य का भी समन्वय है। (६) इसमें प्रकरण के लिए निर्धारित १० अंक हैं। (७) इसमें शृंगार (संभोग शृंगार) रस अंगी है और हास्य, करुण, भय, अद्भुत आदि अंग रस हैं। (८) इसमें २ प्रणय कथाएँ और एक राजनीतिक कथा परस्पर संश्लिष्ट एवं अविभाज्य रूप से प्रस्तुत की गई हैं- (क) प्रणयकथा-चारुदत्त और वसन्तसेना, (ख) प्रणयकथा- शर्विलक और मदनिका, (ग) राजनीतिक कथा-राजा पालक का पतन और आर्यक का राज्यारूढ़ होना। (९) इसकी कथा आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी है। (१०) कथावस्तु में प्रारम्भ से अन्त तक गतिशीलता है। (११) कथानक में प्रणय सम्बन्ध में प्रकृति-विपर्यय । सामान्यतया पुरुष स्त्री पर रीझता है। इसमें स्त्री चारुदत्त पुरुष पर रीझती है। (१२) कथानक के मध्य में (अंक ५ में) प्रणय सम्बन्ध की परिपूर्णता। अंक ५ में दोनों का प्रणय सम्बन्ध पूर्ण हो जाता है, सामान्यतया नाटक के अन्त में इसकी पूर्णता होती है।

पात्र-

(१) सभी कोटि के पात्र लिए गए हैं। निम्न श्रेणी के पात्रों की संख्या अधिक है, अतः नाटक अधिक यथार्थवादी है। (२) पात्र सभी वर्गों का तथा जीवन के सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे केवल राजापेक्षी नहीं हैं। (३) गौण पात्रों के चरित्र चित्रण में विशेष जागरूकता दृष्टिगोचर होती है। (४) पात्रों में अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व है। वे लेखक के हाथ की कठपुतली नहीं हैं। (५) पात्र सार्वभौम हैं। वे किसी भी देश, काल और समाज में सरलता से प्राप्य हैं। उनके आचरण सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं। (६) चरित्र चित्रण में मानववादी दृष्टिकोण है। मानव-सुलभ सद्गुणों और दुर्गुणों का स्वाभाविक चित्रण किया गया है।

शैली-

(१) शैली में सरलता, सरसता, स्पष्टता और अकृत्रिमता है। (२) सरल भाषा का प्रयोग किया गया है और कठिन समासों का अभाव है। (३) इसमें वैदर्भी रीति अपनाई गई है। कहीं-कहीं गौडी रीति का

भी आश्रय लिया गया है। (४) वर्णन अपेक्षाकृत छोटे हैं। इसमें कल्पना की ऊँची उड़ानों का सर्वथा अभाव है, तथापि वर्णनों में सहृदयता और रोचकता है।

कथोपकथन-

(१) संवाद सजीव हैं। (२) लम्बे कथोपकथन का अभाव है। (३) उत्तर-प्रत्युत्तर छोटे और स्वाभाविक हैं। (४) संवादों में व्यंग्य और हास्य का सुन्दर पुट है। (५) संवादों में यथार्थता और स्वाभाविकता है। (६) संवादों में प्रसंग के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य-

(१) इसमें यथार्थ जीवन का मूल्यांकन किया गया है। (२) कर्म के आधार पर उच्चता और नीचता का सिद्धान्त माना गया है। (३) गुणों से मनुष्य का महत्त्व होता है, जाति या वर्ग आदि के आधार पर नहीं। (४) ब्राह्मण और बौद्ध धर्म का समन्वय प्रदर्शित किया गया है। (५) चरित्र की उदात्तता पर बल दिया गया है। (६) राजनीति में जनतान्त्रिक तत्त्वों के महत्त्व का प्रतिपादन है। (७) समाज के उपेक्षित वर्ग के प्रति सहानुभूति और समाज में उनकी उपयोगिता का प्रतिपादन है।

अभिनेयता-

(१) नाटक अधिक लम्बा है। १० अंक हैं। प्रत्येक अंक में कई दृश्य हैं। ५वें अंक में वर्षा वर्णन तथा ४थे अंक में वसन्तसेना के प्रासाद के ७ खंड रंगमंच पर दिखाना संभव नहीं है। (२) पूरा नाटक एक बैठक में दिखाना संभव नहीं है। २ बैठकों में दिखाने से निरन्तरता नहीं रहेगी और रस-भंग होगा। (३) नाटक की कथावस्तु अभिनय के लिए पूर्णतया उपयुक्त है। एक बैठक में पूरे नाटक का अभिनय करने के लिए आवश्यक है कि अनावश्यक विस्तार एवं अनुपयुक्त दृश्यों को छोड़ दिया जाए। इस प्रकार संक्षिप्त नाटक अभिनय के लिए उपयोगी हो सकेगा।

मृच्छकटिक में चरित्र चित्रण- मृच्छकटिक चित्रणबाहुल्य नाटक है, महाकवि शूद्रक ने श्रेष्ठ और पतित-सभी का चित्रण किया है। इस प्रकार यह प्रकरण शुद्ध चरित्र चित्रण प्रधान है। इसमें किसी विशेष रस का निरूपण न करते हुए केवल घटनाओं को ही अधिक महत्त्व दिया गया है । दरिद्र चारुदत्त इस प्रकरण का नायक है तथा वसन्तसेना नायिका के पद पर आसीन होती है जो कि एक

गणिका है। चारुदत्त जैसे लोक में लब्धप्रतिष्ठ ब्राह्मण और वसन्तसेना के समान दर-दर भटकनेवाली गणिका में प्रेम दिखाकर कवि ने स्वाभाविकता एवं रोचकता का मनोरम संचार किया है। इसमें बहुत अधिक पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है।

मृच्छकटिक का वैशिष्ट्य- संस्कृत के नाट्य-साहित्य में 'मृच्छकटिक' का अपना वैशिष्ट्य और महत्त्व है। संस्कृत के प्रकरण ग्रन्थों में इसकी लोकप्रियता अद्वितीय रही है। यही कारण है कि भारत की अनेक प्रचलित भाषायों में तो इसका अनुवाद हुआ ही है, कई विदेशी भाषाओं में भी इसका अनुवाद हो चुका है। रूस में तो यह रंगमंच पर अभिनय तक हो चुका है। वास्तव में इसमें कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जिससे यह जन-मानस के अधिक निकट और अधिक लोकप्रिय समझा जाता है। इसकी पहली विशेषता तो यह है कि इसमें मध्यमवर्ग से कथावस्तु चुन गई है, इसमें उज्जयिनी के मध्यवर्गीय जीवन का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। इसमें जुआरी, धूर्त, चोर, गणिका, भिक्षु, राजकर्मचारी, उदार, दरिद्र, पुलिस आदि सभी का यथार्थ अंकन हुआ है, इसके पात्र कल्पना लोक के प्राणी न होकर इसी लोक के प्राणी हैं। उनमें अतिमानवीयता नहीं है। उनकी रुचि अरुचि, उनके सुख दुःख हमारे ही समान हैं। उनकी भाषा लोकभाषा है और लोक व्यवहार उनका जीवन है, उनकी कहानी दर्शक की अपनी कहानी है और उनकी समस्याएँ दर्शक की अपनी समस्याएँ हैं। यद्यपि भास, कालिदास और भवभूति में हमें काव्य और कल्पना का उदात्त और परिष्कृत रूप मिलता है, किन्तु 'मृच्छकटिक' में जीवन की कठोर वास्तविकता के दर्शन होते हैं। अतः यदि यह कहें कि 'मृच्छकटिक' संस्कृत का एक मात्र यथार्थवादी नाटक है तो अनुचित न होगा।

दूसरी विशेषता 'मृच्छकटिक' में यह है कि इसकी कथावस्तु में घटना चक्र गतिशील है। कवि ने पालक तथा आर्यक की राजनैतिक कथा को चारुदत्त और वसन्तसेना की प्रणय कथा से बड़े कौशल से मिलाया है। यहां आर्यक की कथा प्रेमकथा का अङ्ग बनकर भी 'मृच्छकटिक' की कार्यान्विति में कोई बाधा नहीं डालती। इसके अतिरिक्त शूद्रक के संवाद सरल और संक्षिप्त हैं। उनमें सर्वत्र वाग्विदग्धता एवं चुटीले व्यंग्य के दर्शन होते हैं। हास्य रस की अभिव्यञ्जना में तो यह संस्कृत के नाट्य साहित्य में बेजोड़ है।

तीसरी विशेषता यह है कि यह एक चरित्र प्रधान नाटक है इसका प्रत्येक पात्र अपनी निजी विशेषता रखता है। वह अपना विशेष व्यक्तित्व लेकर सामने आता है, केवल प्रतिनिधि पात्र बनकर नहीं। इसके साथ ही अनेक बहुमूल्य स्मरणीय सूक्तियों किंवा श्लोकों से यह रूपक शोभित है। ये सूक्तियां और सुभाषित व्यावहारिक आदर्शों, काव्य सौन्दर्यो एवं जीवन की शिक्षाओं से भरे हुए हैं। इसकी भाषा-शैली भी सरल, सुबोध और रोचक है। पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग इसमें हुआ है जो नाटक के सर्वथा अनुकूल है।

चौथी विशेषता 'मृच्छकटिक' की यह है कि इसमें तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक दशा का सच्चा चित्रण अति है जो केवल बड़े लोगों का चित्रण न होकर सामान्य समाज का है। इसमें चाण्डाल से लेकर त्रिकाल सन्ध्योपासना करने वाले ब्राह्मण तक का एवं वेश्या से लेकर पतिव्रता साध्वी पत्नी तक का यथार्थ अंकन हुआ है। अतः इस दृष्टि से 'मृच्छकटिक' को केवल एक प्रकरण मात्र न मानकर जनकाव्य भी माना जा सकता है। अतएव संक्षेप में कहें तो कह सकते हैं कि 'मृच्छकटिक' संस्कृत नाट्य साहित्य का अनुपम ग्रन्थ-रत्न है। कुछ त्रुटियों के होते हुए भी अपनी विशेषताओं के कारण ही यह अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है। यह सच है कि इसमें कालिदास की सी चारुता और भावव्यञ्जकता, भवभूति की सी उदात्तता एवं भावप्रवणता उपलब्ध नहीं होती, किन्तु फिर भी इसमें ऐसी अनूठी मनोरमता है जो अन्यत्र अत्यन्त दुर्लभ है।

मृच्छकटिक का रस-मृच्छकटिक का मुख्य रस शृङ्गार है। अनेक रसों के विभिन्न सामग्रियों से परिपुष्ट शृङ्गार का सुन्दर रूप कवि ने दिखलाया है। सहृदय कवि ने अपनी अनुभूतिमय एवं संवेदनशील कल्पना के प्रसाद द्वारा मृच्छकटिक में इतने रससिक्त प्रसङ्गों की अवतारणा की है कि सारा प्रकरण वेदनाजनित आँसुओं का एक सागर-सा बन गया है।